भोगवादी सोच से बढ़ी समस्याएं : आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 6 फरवरी।

श्रीमद् मघवा समवसरण में विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए प्रज्ञा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ ने शुक्रवार को कहा - सत्य शाश्वत होता है, शाश्वत वह है जो त्रैकालिक हो, जो अतित में या वर्तमान में है और भविश्य में भी रहेगा। वस्तु शाश्वत नहीं होती, लेकिन सत्य का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता। लोकमहर्षि यहां व्रत दीक्षा क्या और क्यों? विषय पर बोल रहे थे। दैनिक प्रवचन में आचार्य महप्रज्ञ ने कहा - आज इच्छाओं को खेलने के लिए खुला मैदान दे दिया गया है, आधुनिक समझ बन गई है कि सुख-सुविधा में मांग को पूरी करने की जरूरत से इंकार नहीं किया जा सकता लेकिन जहां अतिभोग हो वहीं स्वास्थ्य की कल्पना बेमानी है। आचार्यश्री ने महावीर वाणी के हवाले से धर्म के दो प्रकारों का जिक्र करते हुए कहा कि साधना के सौपान पर धर्म की दो भुमिका है आगार और अणगार धर्म, साथ ही सृष्टि संतुलन के लिए इच्छा परिमाण पर बल देते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि पदार्थ सीमित है और उपभोक्ता की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, ऐसी स्थिति में अगर व्रत का मुल्यांकन नहीं हुआ तो वह दिन दूर नहीं जब पूरी सृष्टि अन्न और पानी जैसी जीवन की मूलभूत जरूरतों को तरस जायेंगे। आचार्य श्री ने आगे कहा जो सीमित आहार करते हैं उनका अपान शुद्ध रहता है जिससे नकारात्मक विचार पैदा नहीं होते। व्रत दीक्षा सिर्फ जैन श्रावकों के लिये ही नहीं बल्कि विश्वव्यापी आवश्यकता है। अहिंसा के क्षेत्र में काम करने वाले अगर व्रत दीक्षा को व्यापक मिशन बनाये तो हर समस्या समाधान को पा सकती है।

युवाचार्य श्री महाश्रमण ने अपने उद्बोधन में कहा - जिसमें त्याग संयम नहीं है वह आध्यात्मिक मायने में बालक होता है और जिसका जीवन व्रतमय है वह पंडित है। अहिंसा पांडित्य का लक्षण है, पंडित होने के लिये अहिंसा को आत्मसात करना अत्यंत आवश्यक है। आर्हत वांड्मय में अहिंसा विकास के सूत्रों का उल्लेख करते हुए युवाचार्य श्री महाश्रमण ने आगे कहा कि जीवन की यात्रा में दुःख आ जाये तो उनसे ना टूटे और सुख के उपस्थित होने पर अहंकार से न भरे यही समता की साधना है, यही साधना साधक को विकारों से मुक्त कर मानसिक व आत्मिक शांति प्रदान करती है साथ ही युवाचार्य श्री का मानना था कि जीवन में कोई भी परिस्थिति स्थायी नहीं होती इसलिए अनुकूलता में हर्ष और प्रतिकूलता में नाराज होकर अति संवेदनशीलता के शिकार बनने से हमेशा बचना चाहिये। आदमी प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण करें कि दिनभर में कितनी बार राग और द्वेष से प्रभावित हुआ हूं ''बार-बार ऐसे आत्मनिरीक्षण से जीवन के सफर में विशमता से सदा सदा के लिये मुक्ति पाई जा सकती है।

इस अवसर पर साध्वी ऋषिप्रभा ने अपने दीक्षा दिवस पर विचाराभिव्यक्ति दी। इसी क्रम में मुनि पारस कुमार, समणी मृदुप्रज्ञा ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी। मंच संचालन मुनि हिमांशु कुमार ने किया।

प्रेक्षाध्यान शिविर 11 से

बीदासर, 6 फरवरी।

प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य, प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल के निर्देशन में तुलसी अध्यात्म नीडम और आचार्य महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति बीदासर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 11 से 18 फरवरी, 2009 तक सप्त दिवसीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर का आयोजन होगा। यह जानकारी प्रवास व्यवस्था समिति के प्रचार-प्रसार प्रभारी कमल दूगड़ ने दी। दुगड़ ने बताया कि सप्तदिवसीय शिविर पूर्ण रूप से आवासीय होगा जिसकी पंजीयन व आरक्षण तेरापंथ युवक परिषद कार्यालय में शुरू हो गया है। मिली जानकारी के अनुसार आरक्षित शिविरार्थियों को दैनिक उपयोगी सामग्री की व्यवस्था को स्वयं सुनिश्चित करनी होगी। दुगड़ ने बताया कि प्रत्येक माह के 11 से 18 तारीख को यह शिविर आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित होंगे। फरवरी, मार्च और अप्रेल माह के शिविरों का बीदासर में ही आयोजन होगा। शिविर का शुभारंभ दिनांक 11 फरवरी, 2009 को सुबह 8.00 बजे और समापन दिनांक 18 फरवरी, 2009 को सायं 8.00 बजे होगा।

धम्म जागरणा आज

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु की मासिक तिथि पार आज शाम मघवा समवसरण में धम्म आज शनिवार (7.2.2009) को आयोजन किया जायेगा। अर्हत वंदना के साथ ही शुरू होने वाले इस संगीत संध्या कार्यक्रम में मुनियों एवं श्रावक-श्राविकाओं द्वारा आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा स्वरों की प्रस्तुति दी जायेगी।

- अशोक सियोल

99829 03770